फौजी अफसर की नवविवाहिता बीवी ने अपने घर में चूत चुदवाई -3

“चुदाई की फच्च फच्च, मेरी आहें व सीत्कारें, राजे के मुंह से निकलती हुई हैं हैं हैं और मस्त गालियों की आवाज़ों से कमरा गूंज उठा। यदि कोई घर के बाहर सुन रहा होता तो फ़ौरन समझ लेता यहाँ एक मस्त चुदाई का खेल चल रहा है। ...”

Story By: चूतेश (CHUTNIWAS)
Posted: Friday, March 4th, 2016
Categories: कोई मिल गया
Online version: फौजी अफसर की नवविवाहिता बीवी ने अपने घर में चूत चुदवाई -3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

फौजी अफसर की नवविवाहिता बीवी ने अपने घर में चूत चुदवाई -3

मैंने कामविह्वल हो कर राजे से कहा- राजे… सुन मादरचोद… मुझे वैसे ही चोद जैसे तूने नीलम को वहशी की तरह चोदा था…
इतना कह के मैंने टाँगें राजे की गर्दन में क्रॉस करके फंसा दीं और चूतड़ उछाल कर धक्के मारने की कोशिश करने लगी।
राजे हंसकर बोला- साली… राण्ड… तेरी माँ को नंगा नचवाऊं हरामज़ादी कमीनी… तसल्ली रख बहन की लौड़ी… अभी करता हूँ तेरी बॉडी की मरम्मत… साली वेश्या… आज तेरा बम भोसड़ा बना देता हूँ… रुक थोड़ा सा… रंडी की औलाद!

इतना कह के राजे ने मेरे पैर, जो उसकी गर्दन में कुंडली मार के लिपटे हुए थे, अलग अलग किये और लगा उनके तलवे बेसाख्ता चाटने… पैरों के उंगली अंगूठे के नीचे तलवे पर जो उभार होते हैं उनको चाटा, फिर दोनों पैरों के अंगूठे एक साथ मुंह में लेकर लॉलीपॉप की भांति चूसने लगा।
कहाँ तो मैं कह रही थी कि दरिंदे जैसे मुझे चोदे और कहाँ ये हरामी मेरे पैर चाट रहा था। लेकिन मज़ा बेतहाशा आ रहा था।
वो जीभ पूरी बाहर निकाल लेता था जैसे कोई कुत्ता हो और फिर जीभ की पूरी लम्बाई से चाटता था। राजे के मुंह के रस से मेरे पैर भीग गए थे। वो दबादब चाटे ही जा रहा था और मेरी मस्ती उतनी ही रफ़्तार से बढ़े जा रही थी।

तभी यकायक उसने मेरी चूचियाँ कस के जकड़ लीं और अपने सख्त उंगलियाँ व अंगूठे को मेरे अकड़े हुए चूचों में गाड़ दिया।

मैंने अब तक हथियार डाल दिए थे और मैं उसके प्यार के समुद्र में गोते लगाने लगी थी, उसके आगे की चुदाई एक सस्पेंस के भांति होने लगी, मैं हर पल यही सोचती रहती कि अगला धक्का तगड़ा होगा या हौले से ? वो मेरे चूचे कुचलेगा या मेरे पैरों को दुलार से चूमेगा ? उसका हाथ अब मेरी नाभि में जायेगा या मेरी जांघों को मसलेगा ?

मेरी सांसें फूल चुकी थीं, छातियाँ तेज़ तेज़ ऊपर नीचे ऊपर नीचे होने लगी थीं, मैंने राजे के चहरे को बड़े प्यार से भरी नज़रों से निहारा, उसकी आँखों में लाल लाल डोरे तैर रहे थे, उसका चेहरा भी तमतमाने लगा था, होंठों के दोनों कोनों से लार टपकने लगी थी।

मेरे पैरों के दोनों अंगूठे अभी भी उसके मुंह में थे। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि पैर चटवाने में इतना ज़बरदस्त लुत्फ़ आता है।
हालाँकि मुझे ये नीलम और अनुजा ने बताया था परन्तु बताया हुआ सुनने और स्वयं इस आनन्द का अनुभव करने में काफी फर्क होता है।

मैं बड़ी तेज़ी से चरम सीमा की ओर अग्रसर थी लेकिन स्खलित होने से पहले मैं राजे का लौड़ा अपनी बुर में घुसता हुआ और अंदर बाहर होते देखना चाहती थी।

चुदाई करते हुए वो मेरे मम्मे यूँ रगड़ रगड़ के मसल रहा था जैसे उनको बदन से उखाड़ ही देगा।
‘राजे… राजे… थोड़ी देर के लिए चूचियाँ छोड़ो न प्लीज़!’
‘क्यों क्या हुआ हरामज़ादी… चूचों की जलन खत्म हो गई क्या ?’ राजे ने एक ज़ोरदार धक्का ठोका और चूचे बड़ी ताक़त से कुचले…
आनन्दमय पीड़ा की एक किलकारी मेरे मुंह से निकली- …आआह आआह आआह राजे… तेरा लंड मेरे भीतर घुसते हुए देखने की बड़ी मर्ज़ी है…मैं कुहनियों के बल होकर देखूंगी… साले चूचे छोड़ेगा तभी तो उठूंगी न कुत्ते!

राजे ने पैर मुंह से निकाल दिए, हाथ चूचों से हटाकर मेरे कंधे पकड़े और घसीटते हुए मुझे ऊपर उठा दिया जिस से मैं कुहनियों के बल टिक सकूँ।
कोहनियों पर खुद को जमा के मैंने अपने कटिप्रदेश पर निगाहें डालीं। लंड जड़ तक चूत में घुसा हुआ था और राजे की झांटों के सिवाय कुछ भी नज़ा नहीं आ रहा था।

तभी राजे ने मेरी टाँगें पूरी फैला दीं और लंड बाहर खींचा जब तक लौड़ा सारा बाहर नहीं आ गया, अब सिर्फ टोपा चूत के होंठों में था और मेरी चूत के रस से लिबड़ा हुआ पूरा लौड़ा बाहर… राजे की झांटें भी चूत के द्रव से पूरी तरह भीगी हुई थीं।

'ले देख भोसड़ी वाली रंडी देख.. अब घुसाता हूँ… देख ध्यान से कमीनी!' राजे ने गहरी सांस लेते हुए हुम्म्म की ऊँची आवाज़ के साथ एक धक्का लगाया तो लौड़ा फिर से चूत में जा घुसा।
पाठको, बेहद मज़ा आया अपनी चूत में जाते हुए लंड का दृश्य देखकर।

ऐसा उसने कई बार करके मुझे लौड़े को बुर में भीतर घुसते और बाहर निकलते हुए दिखाया। मैं इस नज़ारे से इतनी अधिक कामोत्तेजित हो गई कि चिल्लाती हुई, किलकारियाँ मारती हुई, सीत्कारें भरती हुई, बड़े ज़ोर से झड़ी।
चरम आनन्द में मस्त चूत ने रस का एक तेज़ फव्वारा छोड़ा।
मैंने चूत को बार बार लप लप किया और हर लप लप में एक रस फुहार निकल के लौड़े पर गिरी।

जब मैं पूरी झड़ चुकी तो राजे ने मेरी टाँगें फिर से फैला दीं और मेरे ऊपर लेट गया। उसके अस्सी किलो के सख्त मरदाना शरीर ने मेरे पतले दुबले बदन को दबा कर रख दिया।
मैंने टाँगें उसकी टांगों के दोनों तरफ लपेट लीं और मस्ती में उसके नीचे दबे होने के मधुर सुख का अनुभव करती हुई चुदने लगी।

राजे ने अब मेरे होंठों से अपने होंठ चिपका दिए थे और उसकी जीभ मेरे मुंह में घुसी हुई थी। उसकी छाती मेरे चूचों को दबाये हुए थी और अब वो हल्के हल्के धक्के लगाये जा रहा था, लौड़ा चूत की और उसकी जीभ मुंह की चुदाई कर रहे थे, उसका मुखरस मेरे मुंह में लगातार आ रहा था।

चुदाई का मज़ा पराकाष्ठा तक जा पहुंचा था। बिना एक भी शब्द बोले, एक दूसरे के बदन से कस के लिपटे हुए, एक दूसरे के होंठ चूसते हुए तथा एक दूसरे की सांस से सांस लेते हुए हम एक अत्यधिक मधुर चुदाई में खो चुके थे।

मेरा एक हाथ राजे के बालों में था और दूसरा उसकी पीठ को दबा रहा था। जोश में आकर कभी कभी मैं उसके बाल खींच देती थी तो कभी कभी उसकी पीठ में नाखून गाड़ देती थी। कई बार मैंने उसकी पीठ में लम्बी लम्बी खरोंचें भी मार दीं जिनका मुझे उस समय तो पता नहीं लगा मगर चुदाई के बाद जब मैंने उसकी खरोंचों से भरी हुई कमर देखी तो मालूम हुआ कि मैं उसको कितने ज़ोर से खसोट रही थी।

मेरे मुंह में उसके मुखरस का निरंतर प्रवाह मेरे आनन्द को बहुत तीव्र गति से बढ़ा रहा था। अगर मेरा मुंह राजे के होंठों ने बंद न किया होता तो निश्चित रूप से मैं गहरी गहरी आहें और सीत्कारें भरती। सीत्कार न ले पाने के कारण मैंने सीत्कार के स्थान पर मैंने अपनी उत्तेजना राजे की टांगों में अपनी टाँगें बार बार टाइट और लूज़ करके और उसकी पीठ पर नखों से लकीरें खींच के दर्शाई।

इधर वो महा चोदू राजे मुझे अपने बदन से रगड़ रगड़ के चोद रहा था, वो धक्के लगाने के लिए चूतड़ ऊपर न उछालता बल्कि खुद को मुझे से चिपकाए चिपकाए ही पीछे को सरकता जिस से लंड करीब आधा बाहर निकल जाता और फिर मेरी बॉडी को रगड़ते हुए वापिस आगे को सरकता जिस से लौड़ा दुबारा से चूत में पूरा जा घुसता।

मेरी कामोत्तेजना का ठिकाना नहीं था, लंड के घर्षण से गर्माई हुई चूत दबादब रस बहा रही थी, लंड के चूत में अंदर बाहर आने जाने पर ज़ोर से फच्च फच्च फच्च की आवाज़ गूंज उठती।
इस नशीली आवाज़ से मेरा कामावेश ऊँची उड़ान भर रहा था, मैं भी पूरी जोश से चूतड़ हिला हिला के राजे के धक्कों से ताल में ताल मिलाने की चेष्टा कर रही थी।

झड़ तो मैं अब तक बहुत बार चुकी थी लेकिन लगता था फिर से जल्दी ही खूब झड़ूंगी।
चुदाई काफी समय से हो रही थी, सोच रही थी ये राजे, माँ का लौड़ा, कितनी लम्बी देर तक चुदाई करता रहता है और अभी भी उसके झड़ने के कोई आसार नज़र नहीं आ रहे।
फच्च फच्च फच्च… फच्च फच्च फच्च… फच्च फच्च फच्च फच्च… चुदाई होते हुए काफी समय हो चुका था।
मैंने टाइम तो नहीं देखा था मगर मेरा अंदाज़ था कि एक घंटे से ऊपर हो चुका होगा, शायद सवा घंटा भी हो गया हो!

तभी राजे ने मेरे मुंह से मुंह अलग करके मेरे चेहरे पर दनादन बीस पच्चीस चुम्मे दागे, उउउउम्म्म आआह !!! खूब गर्म गर्म गीले गीले चुम्मे !!!
मज़े में मेरे बदन में वासना की एक तेज़ लहर सी दौड़ी और मैंने भी मस्ता कर राजे की पीठ कस के जकड़ ली और टाँगें भी ज़ोर से कस लीं।

तब राजे ने अपने को थोड़ा ऊपर उठाया और अपने पंजे मेरे दोनों मम्मों पर जमा कर अंगूठे पूरी ताक़त से चूचुकों पर रखकर ज़ोरों से में दबा दिए। वासना की वो लहर और भी तेज़ दौड़ने लगी।

राजे ने एक गहरी सांस ली और चूतड़ ऊपर उठकर लौड़ा चूत से पूरा खींच लिया, फिर मुझे मादरचोद, कमीनी, कुतिया कहते हुए बहुत ज़बरदस्त आठ दस धक्के टिकाये।
मेरा बदन झनझना उठा, लगा कि मेरी बच्चेदानी, कलेजा और दिल सब मेरे सर को

फाड़ते हुए बाहर आ जायेंगे।

फिर राजे ने कहा- माँ की लौड़ी… साली रंडी की औलाद… ले अब मज़ा वहशी दरिंदो वाली चुदाई का… हरामज़ादी जैसे तेरी सहेली नीलम रानी की गांड फटी थी ऐसे ही तेरी भी फटने वाली है।

एक और ज़बरदस्त धक्का !
'ले बहनचोद कुतिया…'
चार पांच और उतने ही करारे धक्के !

साथ साथ राजे ने अंगूठे निप्पलों में घुसा रखे थे और उनको चूचियों में ज़ोर ज़ोर से घुमा रहा था।
बहुत ही आनन्द से भरपूर पीड़ा थी ये !

'अब तेरी मैं माँ चोदने वाला हूँ रांड… चिल्लाना नहीं… अगर चीखी तो साली की गांड में एक सरिया ठूंस दूंगा… मादरचोद बदचलन कुलटा कहीं की !'
मैं मस्ती में कुलबुलाती हुई बड़े इतराऊ अंदाज़ में बोली- राजे… मैं कितना भी चीखूँ चिल्लाऊँ तू अपनी किये जाना… छोड़ना नहीं… ले चोद दे मेरी माँ… फाड़ दे गांड बहनचोद कुत्ते !

उसके पश्चात राजे ने जो मेरे शरीर का कुचला किया है वो पूछो ही मत। मेरे चूचे, मेरी जांघें, मेरी बाहें, मेरा पेट सब साले ने मसल मसल के रख दिए, सारा अकड़ा हुआ बदन पिलपिला कर डाला।
हाथों से वो मुझे कुचलता और लौड़े से धमाधम तगड़े तगड़े धक्के ठोकता.. रस से लबालब भरी हुई चूत हर धक्के पर ढेर सा रस उगल देती।

बिस्तर की चादर भी गीली हो चुकी थी।
चुदाई की फच्च फच्च, मेरी आहें व सीत्कारें, राजे के मुंह से निकलती हुई हैं हैं हैं और मस्त गालियों की आवाज़ों से कमरा गूंज उठा। यदि कोई घर के बाहर सुन रहा होता तो फ़ौरन समझ लेता यहाँ एक मस्त चुदाई का खेल चल रहा है।

मैं कामोत्तेजना के शिखर पर जा पहुंची थी, बस अब एक धमाकेदार स्खलन की ओर अग्रसर थी, पूरे शरीर में एक अजीब सी बिजली सिर से पैरों तक तेज़ी से आ जा रही थी। राजे धक्के बदस्तूर ठोके जा रहा था।
मैंने गुहार लगाई- राजे… थोड़ा सा रुक साले… मैं झड़ने को हूँ…

राजे ने उत्तर में चार बड़े शक्तिशाली धक्के तीव्र गति से पेले और मेरी भगनासा को कस के मसल दिया। बस एक ज़ोर की आआह मेरे मुंह से निकली, मैंने चूतड़ तेज़ी से पांच छह दफा उछाले और फिर यूँ झड़ी जैसे कोई बादल फटा हो- राजे राजे राजे बहनचोद… आआह आआह आआह… उई अम्मा… आआआआह… हाय हाय हाय… सीईई ईईई… चूत से रस की धारा बह चली।

‘मादरचोद… कुतिया… ले मैं भी झड़ा..’ राजे ने ज़ोरदार शॉट्स की एक झड़ी सी लगा दी और शायद बीस पच्चीस धाकड़ धक्कों के बाद ज़ोर से हैं… हैं… हैं.. करता हुआ झड़ गया, गर्म गर्म लावा के मोटे मोटे थक्के चूत में गिरते हुए महसूस हुए, लंड बार बार तुनकता और एक लौन्दा मक्खन का छोड़ देता।
अंत में लौड़े का तुनकना धीमे हो गया और फिर दो तीन हल्के हल्के तुनकों के बाद लौड़ा सुस्त पड़ गया। चूत जो अब तक इस मोटे लौड़े के घुसे होने के कारण भरी भरी थी अब खाली खाली लगने लगी।

राजे एक लम्बी दौड़ से थके हुए घोड़े की भांति हाँफता हुआ मेरे ऊपर गिर पड़ा और एक बार फिर से मैं राजे के नीचे दबने का मधुर सुख अनुभव करने लगी।

विशेषकर एक अत्यधिक आनन्ददायक चुदाई के बाद, बीसियों दफा झड़ने के बाद और अपने आशिक का लावा अपने बदन में लेने के बाद उसका मुरझाया लौड़ा चूत में लिए हुए उसके सख्त शरीर के नीचे दबने का ये अहसास बहुत ही ज़्यादा सुखद था।

मैं बड़े आराम से राजे के बालों में उंगलियाँ फिराती हुई पड़ी रही, वो बार बार मुझे हौले हौले से चूम रहा था, समय रुक सा गया था, हम यूँ ही एक दूसरे के नंगे बदन के स्पर्श का मज़ा लेते हुए काफी देर लेटे रहे।
मुझे कुछ देर के लिए एक हल्की झपकी भी आ गई।

कहानी जारी रहेगी।

Other stories you may be interested in

मेरी बीवी मेरे सामने पुलिस वाले से चुदी

हॉट वाइफ सेक्स ककोल्ड स्टोरी में मेरी बीवी ने पुलिस वाले से मिलकर मेरे सामने अपनी चूत चुदाई का प्रोग्राम बनाया. इसमें उन दोनों ने मुझे धोखे से फंसा लिया ! नमस्कार दोस्तो, आप लोगों ने मेरी पिछली सेक्स कहानी मेरी […]
Full Story >>>

पड़ोस के बाप बेटे- 2

हॉट भाभी Xxx स्टोरी में मुझे पड़ोस के एक अंकल ने अपने घर में चोद दिया. अंकल का लंड पकड़ने के बाद मेरी चूत में भी लंड लेने की आग लग गई थी। ये कैसे हुआ ? नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम […]
Full Story >>>

पड़ोस के बाप बेटे- 1

हॉट अंकल Xx कहानी एक शादीशुदा लड़की की है जिसने पति से बहुत चुदाई करवाई थी लेकिन जब पति बाहर जाते तो उसकी चूत लंड के लिए प्यासी होने लगती थी। नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम रोमा शर्मा है। अगर आपने […]
Full Story >>>

दो सहेलियों ने पति की अदला बदली की- 2

पार्टनर स्वैप सेक्स स्टोरी दो कपल की है. दोनों पुराने दोस्त थे, पास पास रहते थे. चारों ने अपनी सेक्स लाइफ रंगीन करने के लिए मिल कर अदल बदल के चुदाई की. कहानी के पहले भाग सहेलियों ने बनाया अदला […]
Full Story >>>

दोस्त की स्कूल टीचर बीवी की मस्त चुदाई

हॉट स्कूल टीचर सेक्स सम्बन्ध की कहानी में मैंने अपने दोस्त की अध्यापिका पत्नी के साथ सेक्स किया। उसने खुद से ही पहल करके सेक्स संबंधों को बढ़ावा दिया था. दोस्तो, मैं एक बार फिर हाजिर हूँ अपनी एक नई […]
Full Story >>>